

## राजस्थान के केन्द्रीय संरक्षित देवालयों की एक झलक



जगद्धत्यार्थी दर्शन, आयोजना (जयपुर)

“हम सब नित्यकर्म इस ऐतिहासिक विश्वासात को हस्तके अपने ऐतिहासिक एवं विशिष्टता के साथ संरक्षित करें। हमें इसके परिवेश एवं विशिष्टता के साथ बंड़ाइ करने का कोई अधिकार नहीं है। हम इन्हें विश्वासानुर्क संरक्षित बनने तथा भावी पाल्टी को रखने में हेतु कानूनियाँ हैं।”

द्वारा  
अधीक्षण पुरातत्वविद्  
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण  
70/133-148, पटेल मार्ग, मानसरोवर  
जयपुर-302020 (राज.)  
फोन : 0141-2784532-34  
फैक्स : 0141-2784532  
ई-मेल : asijpri@yahoo.co.in

प्रकाशित दर्शन No. 01, 2008

प्रकाशित  
विश्व धरोहर समाप्ति (19-25 नवम्बर, 2008) के अवसर पर



कालिकामता दर्शन, जोधपुर (जयपुर)



भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण  
जयपुर मण्डल, जयपुर



वर्णकार मण्डप एवं मुद्रमण्डप युक्त है। गर्भगृह में शिखरीय स्थापित है। इसका शिखर साधारण एवं अलंकारण विहीन है। वर्तमान में वह मंदिर बीमालतुर दोर के जलाशय के किनारे पर स्थित है।

□ □ □

**कृपया स्मारक परिसर में निष्पत्तिविधियाँ न करें -**

1. अपान व अन्तर्नालील पदार्थ करना।
2. खाना बनाना, गोठ इत्यादि करना।
3. इमारत को गोपेयना, नाम आदि लिखना व अन्य हानि पहुँचाना।
4. मन्दारी फेलना।
5. परिसर में सिंधु उदाहरण में कूल तोड़ना व खत्ति पहुँचाना।
6. चीटिंग व शोलेकूल करना।
7. स्मारक की लीकेज से हेड़ाइल करना।
8. रेतिल अथवा स्मारक के टूटने योग्य भाग पर बैठना।

**कृपया ध्याव दें :**

संरक्षित स्मारक के 100 मीटर के प्रतिविहङ्ग क्षेत्र में किसी भी प्रकार का नुकसानीय अथवा यात्रा करने विद्युत है। उससे परे 200 मीटर तक विनियमित क्षेत्र में भासतीय कुए़कल्य मार्गेशन की अनुमति प्राप्त करके उपर्युक्त कार्य कराया जा सकते हैं।

किसी भी प्रकार की सहायता एवं पूछलाल हेतु सम्पर्क करें :

**आशीक्षण पुरातत्त्वविद्**

भारतीय पुजाराय संस्करण

70/133-140, एंटेल बागी,  
मामताली, जल्दू - 302020 (पं.)

फ़ोन : 0141-2784532-34

फैक्स : 0141-2784532

E-मेल : asipr@yahoo.co.in

“दाद राहे-बर्तमाल बीढ़ी का दाद कराविह है कि वे प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विधियों की अनुग्रह रखें तथा आने वाली बीढ़ी को बुरकिता कर्य में सहित।”

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की स्थापना 1861ई. में हुई। सर एलेक्जेंडर कनिंघम उस समय इसके पुरातात्त्विक सर्वेक्षक थे। उस समय भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का कार्य प्राचीन गौरव तथा राष्ट्रीय धरोहर के समृद्ध तथा गौरवपूर्ण अतीत का परिरक्षण, अन्वेषण, गूढ़ लिपि का अर्थ निकालना तथा इसे व्यक्त करना था। अपनी स्थापना के समय से ही यह संगठन पुरातत्व के विभिन्न क्षेत्र जैसे-प्रागैतिहास, आद्यैतिहासिक, ऐतिहासिक पुरातत्व, कला, वास्तुकला, पुरालेख, मुद्राशास्त्र, अन्वेषण उत्खनन, संरचनात्मक संरक्षण, रासायनिक परिरक्षण, स्थल-संग्रहालय की स्थापना, पुरावशेष का विनियम तथा नियंत्रण, संपूर्ण देश के प्राचीन स्मारकों के परिवेश के सौन्दर्यीकरण के लिए बागवानी जैसे पुरातत्व के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक रूप से शोध कार्य करने में संलग्न रहा है।

वर्तमान में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण देश के सभी राज्यों में स्थित विभिन्न मण्डलों, उपमण्डलों, उत्खनन शाखाओं, स्थल संग्रहालयों, रसायन शाखा एवं उद्यान शाखा के माध्यम से राष्ट्रीय धरोहरों की देखभाल करता है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण अपने विभिन्न क्रिया-कलापों का संचालन दो अधिनियमों-प्राचीन स्मारक तथा पुरातात्त्विक स्थल एवं अवशेष अधिनियम, 1958 तथा पुरावशेष एवं कलानिधि अधिनियम, 1972 तथा उनकी नियमावली के माध्यम से करता है।

जयपुर मण्डल की स्थापना 1985 में हुई थी जिसका क्षेत्राधिकार सम्पूर्ण राजस्थान है। वर्तमान में इस मण्डल के अंतर्गत 160 स्मारक/स्थल संरक्षित घोषित हैं जिनमें किले, महल, देवालय, मस्जिद, अभिलेख, मूर्तियाँ, प्राचीन व उत्खनित स्थल, बौद्ध गुफाएं आदि हैं। जयपुर मण्डल के अंतर्गत दो संग्रहालय हैं जिनमें से एक विश्व प्रसिद्ध हड्डप्पाकालीन उत्खनित स्थल कालीबंगा में स्थित है तथा दूसरा डीग के राजमहलों में है। यद्यपि जयपुर मण्डल में अन्य महत्वपूर्ण स्मारक/स्थल संरक्षित हैं लेकिन इस पुस्तिका के माध्यम से पर्टिकों को कुछ ही महत्वपूर्ण देवालयों/मंदिरों की जानकारी यहाँ दी जा रही है।

## जोपीनाथ मन्दिर

भागड़, विला अवलर

भागड़ की स्थापना आगेर के शासक भगवनदास ने 16वीं सदी के उत्तरार्द्ध में दी थी जो बाद में मार्योमिह की रियासत का केन्द्र बिन्दु रहा। यहाँ रियत चार मंदिरों में जोपीनाथ मंदिर सबसे बड़ा एवं सुन्दर है। ऊंचे चतुर्भुज पर निर्मित यह मंदिर खेति योजना में गर्भगृह, मण्डप एवं मुख्यमण्डप कुल है। पूरा मंदिर काही ऊंचे घट्टों पर बना है जिसमें पूर्ण शीर्ष और सीढ़िया बनी है।



## महाकाल मन्दिर

विलोलिचा, विला भीलवाड़ा



किंवद्दली के नाम से विलोल एवं उपरमात पाठर खेत में स्थित किंवोलिचा में महाकाल, इनारोलीवर एवं उद्योवर मंदिर एक ही समूह में स्थित हैं। इनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध महाकाल मंदिर सम्भवतः 13वीं सदी में बना, इनमें सबसे प्राचीन है जो गुजरात शैली में निर्मित है। यह दोहरे गर्भगृह कुल है जिसका संयुक्त समान्वय है तथा प्रवेशद्वार बनाये गए हैं।

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा स्थापना 1861ई. में हुई। सर एड्स्ट्रोड कर्मियम उस समय इसके पुरातात्त्विक सर्वेक्षण के थे। उस समय भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण का कार्य प्राचीन गैरिव तथा राष्ट्रीय परोदार के सम्बद्ध तथा गैरप्रवृत्ति अतीत का परिदृश्य, अन्वेषण, गृह सिद्धि का अर्थ निकालना तथा इसे व्यक्त करना था। अस्ती राष्ट्राभास के समय से ही यह संग्रह पुरातत्त्व के विभिन्न खेत जैसे—प्रारंगनिहास, आर्योलिहासिक, पैतृहासिक पुरातत्त्व, कला, वास्तुकला, पुरालेख, मुद्रालालव, अन्वेषण उच्चनन, संरचनात्मक संरक्षण, रासायनिक परिदृश्य, स्फल-संग्रहालय की स्थापना, पुस्तकोप का विनियम तथा नियंत्रण, संरूप देश के प्राचीन स्मारकों के परिवेश के गौन्दनीयोंका लिए वागवानी जैसे पुरातत्त्व के विभिन्न खेतों में व्यापक रूप से शोध कार्य करने में संलग्न रहा है।

वर्तमान में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा के सभी गतियों में स्थित विभिन्न वर्गहाँसी, उच्चनन, उच्चनन शास्त्राओं, स्फल संग्रहालयों, स्थापन शास्त्रों एवं उच्चन शास्त्रों के माध्यम से राष्ट्रीय परोदारों की देखभास करता है। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण अपने विभिन्न क्लिया-कलाओं का संचालन हो अधिनियमों-प्राचीन स्मारक तथा पुरातात्त्विक स्थल एवं अवशोष अधिनियम, 1958 तथा पुरावोप एवं कलानिधि अधिनियम, 1972 तथा उनकी विद्यमानी के माध्यम से करता है।

जयपुर मण्डल की स्थापना 1985 में हुई थी जिसका क्षेत्रप्रिकार सम्पूर्ण राजस्थान है। वर्तमान में इस मण्डल के अंतर्गत 160 स्मारक/स्थल संरक्षित घोषित हैं जिनमें किले, महल, देवालय, मस्जिद, अभियाल, मूर्तियाँ, प्राचीन व उन्नतिन स्थल, बीड़ गुरुएं आदि हैं। जयपुर मण्डल के अंतर्गत दो संचारालय हैं जिनमें से एक विश्व प्रालिङ्ग हड्डपाकालीन उन्नतिन स्थल कलालंगो में स्थित है तथा दूसरा दीग के राजमहलों में है। यद्यपि जयपुर मण्डल में अन्य महत्वपूर्ण स्मारक/स्थल संरक्षित हैं लेकिन इस पुस्तिका के माध्यम से पर्यटकों को कुछ ही महत्वपूर्ण देखालयों/मंदिरों की जानकारी दी जा रही है।

गोपीनाथ मन्दिर

भानगढ़, जिला असाम

भगवान्‌राम की स्थापना अमेरे के शासक भगवान्नदाम ने 16वीं सदी के उत्तरार्द्ध में कोई थी जो वार में माहोसिंह की रियासत का केन्द्र बिन्दु रहा। यारी स्थित चार मीठों से गोपीनाथ मंदिर सबसे छोटा है औ सुन्दर है। यहें चकुतीरे पर निर्मित एक मंदिर थोलित

योजना में गर्भगृह, मण्डप एवं मुख्यालय प्रकृति है। पूरा मंदिर काफी ऊचे चबूतरे पर बना है जिसमें पूर्व की ओर संदियोग बनी है।

महाकाल मन्दिर

विजेतिका, जिला भीतरकाश



यह दोहरे गर्भगृह युक्त है जिसका संकेत समामण्डप है तथा प्रवेशद्वार मण्डप से है।

घाटेश्वर मन्दिर

बांगड़ी, जिला पिनामुखमाड



राजत्रिभाटा के सभी वाहनों में  
सियां निर्द रम्भ में पाटेवर  
मंदिर सभी बल, सुन्दर एवं  
कलात्मक है। 100 सभी में प्रशिक्षण  
हीने निर्मित यह मंदिर जिव को  
समर्पित है। कैलिङ योजना में यह  
नर्मधू, अन्तराल एवं सुखमयक  
कुटुम्ब है। सुखमय इह सभी या  
दिव्य है। मंदिर का वाहन शश  
मूर्खों से सुखित है एवं  
कलात्मक है।

कालिकामाता मन्दिर

पिल्लौड़गढ़ दुर्ग, जिला पिल्लौड़गढ़



राजा महानंद द्वारा ४ वीं सदी में निर्मित यह नीरिंग मूलस्थ प्रभावी विश्वासी है जो कठिन कठिन अवधारणा में कालिका महाता की पूजा-अर्धनारी की जाती है। योगनालालत में यह पंथरय गर्भगृह,

देवालयों के स्थल का मानवित्र, राजस्थान



10

संस्कृत	
प्राचीन	वेद वेदान्त
मध्याह्न	ग्रीष्म विष्णु
■	द्वादश शूलिनी
■	संस्कृत

**Example:** *Three firms  
(either two or one)*

अन्नारात, सम्भवण्डप एवं मुख्यण्डप पुक्त है। मंदिर के छत का भास बाद में बना है। इसके सभी नक्कालीन पुक्त हैं।

### कुम्भशत्याम मन्दिर

चित्तोड़गढ़ दुर्ग, जिला चित्तोड़गढ़



मूललक्ष्म से बहुतिक भासा मंदिर के सम्बलालीन एवं समान योजनाभार में निर्मित यह मंदिर भी गर्भगृह, अन्नारात, मण्डप एवं अर्हमण्डप पुक्त है। आनारिक योजना में यह वीस अलंकृत स्थानों पर विश्वा है। भासाराणा कुम्भा ने इस मंदिर के विश्वार का जीवोंदार करताय एवं विश्वा को समर्पित किया विश्वके करण इसे कुम्भशत्याम के नाम से जाना जाता है। मंदिर के सम्मुख एक नहाड़ बाढ़प किया है।

### मण्डलेश्वर मन्दिर

जरूर, जिला बीकानेर

11-12वीं सदी में बागड़ के परमार शासकों द्वारा ग्राजपानी रही अर्धुना जैन एवं शैव



वर्ष का महावर्षीन स्थान रहा है। वहाँ दोनों धर्मों के कई मंदिर निर्मित हैं। प्रमुख नीरो में परमानंद भासक बुद्धधराय द्वारा अपने पिता की यादगार में 1080ई. में बनाया यथा शिव मंदिर है जो मण्डलेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है। केवी जलीय पर शिव यह मंदिर सतरथ एवं निरांशार है। इसने बर्दाक्षर गर्भगृह, अन्नारात तथा आलिन्दो से पुक्त सम्भवण्डप एवं मुख्यण्डप हैं। मुख्यण्डप के सामने एक नन्दी भवन है। सम्भवण्डप में शिखम संकात् 1136 (1080ई.) का एक अभिलेख है। यह स्थान शैव धर्म के लक्ष्मिता सम्प्रदाय से सम्बंधित रहा है।

### महानाल मन्दिर

मेनाल, जिला चित्तोड़गढ़

11-12वीं सदी में वाहमानों के भासानकाल में मेनाल शैवधर्म के लक्ष्मिता सम्प्रदाय का प्रमुख केन्द्र रहा है। बासुकुला वी भूमित भैली में 11वीं सदी में निर्मित यह मंदिर ताराश्वर पंचरथ योजना वर आधारित है जो गर्भगृह, अन्नारात एवं रंगलण्डप पुक्त है। उपर्याकार में शिखार के मुख्य भाग के अंगलिकार नीचे के भाग के सज्जन हैं।



रंगमण्डप की छत संवर्णा शैली में बनी है। मंदिर के समुख नन्दीमण्डप अलग से बना है।

### सोमनाथ मंदिर

देवस्तोमनाथ, जिला झूँझुरुर

12वीं शताब्दी में भास्त्र शैली में निर्मित यह मंदिर चालावान शिव को समर्पित है। इसका गर्भगृह घटातल से 2.7 मीटर ऊंचे है तथा ऊपर तीन मंजिला है जिसके ऊपर शिवालय बना हुआ है। इसका अन्तर्गत संकरा है तथा संवर्णा



छत से पूछा सामान्यतः मैं तीन और से प्रवेश है। मंदिर के अन्दर माहारावत सांस्कृत (1580ई.) एवं महारावत गोपीनाथ के दो अभिलेख उत्कीर्ण हैं।

### श्री जगत शिरोमणी मंदिर

आगेर, जिला झूँझुरुर



इस मंदिर का निर्माण गाजा भानसिंह प्रधन की पत्नी रानी कनकावती ने अपने पुत्र जगत सिंह की यादगार में 17वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में करवाया था। परिचयमानिमुख यह मंदिर गाजा कूण को समर्पित है जो योजनाकार में वर्भगृह, अन्तर्गत एवं मण्डपमुक्त है। इसके दोनों पाँचों में जालीदार बलिविहर बिड़कियों हैं। पूरा मंदिर एक ऊँची जलती पर बना है जो काफी अलंकृत है। मंदिर के सम्मुख अलग से एक बाब्द एवं आति अलंकृत गरुड़ मण्डप है। मंदिर में प्रवेश हेतु एक भव्य लौरणद्वारा है।

## सास-बहु मन्दिर

नानदा, जिला उदयपुर



सासबहु के नाम से प्रसिद्ध इन दो दीणाव मंदिरों का निर्माण दासवी शताब्दी के उत्तरांश में करवाया गया था। सास के नाम से प्रसिद्ध बहु मंदिर दस लघु मंदिरों से एवं छोटा बहु मंदिर पांच लघु मंदिरों से बिरा हुआ है। दोनों मंदिर योजनाकार में पंचरथ गर्भगृह, अन्नरात, पार्व आलिङ्ग दुकृत समाप्तिष्ठप एवं मुख्यमण्डप युक्त हैं। बाहरी दीवारों पर द्रवा, विष्णु, शिव, राम, बलराम आदि की प्रतिमाएँ हैं। उभयी प्रतिमाओं ने देवी-देवताओं की मूर्तियाँ, अमरार्थ, कौड़ायुक्त दैनत एवं रामायण से सम्बन्धित दृश्य हैं। मंदिरों में प्रवेश एक लोगन में से होकर होता था।

## बावल देवरी मन्दिर

कुम्भलगढ़ तुरंग, जिला गोवारामगढ़



इस प्रसिद्ध जैन मंदिर का नाम एक ही परिसर में निर्मित बावन (52) मंदिरों के आधार पर पड़ा जिनका एकमात्र प्रवेश द्वार उत्तर की ओर है। यह मंदिर समूह चारदीवारी से घिरा है जिसमें सभी ओर लघु मंदिर हैं जिनका द्वार अन्दर की ओर आंगन में सुलगता है। परिसर में स्थित आंगन के मध्य में अण्डाकृत दो बड़े मंदिर हैं। आगे के लघुसे दो मंदिर में पर्वगृह, अन्नरात एवं खुला समाप्तिष्ठप हैं। गर्भगृह के ललाटविन्द पर जैन लौटीकर की प्रतिमा स्थापित है किन्तु थोटे मंदिर मूर्तियाँहीन हैं।

## बीसलटेख मन्दिर

बीसलतुरा, जिला टोक

गोकरणेश्वर अयपा बीसलटेख मंदिर का निर्माण 12वीं शताब्दी में यहामान शासक विग्रहगत धनुर्धारा करवाया गया था। योजनाकार में यह पंचरथ गर्भगृह, अन्नरात,



दर्शकार मण्डप एवं मुख्यमण्डप मुक्ता है। गर्भगृह में शिखरलिंग स्थापित है। इसका शिखर साधारण एवं असंकरन विहीन है। वर्तमान में यह मंदिर बीसलपुर दोष के जलभ्रष्ट के किनारे पर स्थित है।

● ● ●

## बावल देवरी मन्दिर

कुम्भलगढ़ तुर्मी, रिया राजसमंड



इस प्रसिद्ध जैन मंदिर का नाम एक ही परिसर में निर्मित बादन (52) मंदिरों के आकार पर पाया जिनका एकमात्र प्रतिक्षेप छार उत्तर की ओर है। यह मंदिर सहूल घारदीवारी से बिरुद्ध है जिसमें सभी और लघु मंदिर हैं जिनका छार अन्दर की ओर आंतर में खुलता है। परिसर में स्थित आंतर के मध्य में आपेक्षाकृत दो बड़े मंदिर हैं। आगे के सबसे बड़े मंदिर में गर्भगृह, अंतराल एवं खुला सभामण्डप है। गर्भगृह के सतारीविष्व पर जैन लीर्धकर वीं प्रतिमा स्थापित है जिन्हुंने धोटे मंदिर मूर्तिविहीन हैं।

## बीसलदेव मन्दिर

बीसलपुर, जिला टीक

गोकरणेश्वर अथवा बीसलदेव मंदिर का निर्माण 12वीं शताब्दी में यामान शासक दिल्लीगढ़ चतुर्थ द्वारा करवाया गया था। योजनाकार में यह पंचरथ गर्भगृह, अंतराल,

● ●

● ●